पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/24-26 प्रकाशित 01.12.2024 इस अंक का मूल्य 2 रूपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

दानदाताओं से अपील

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कार्य व गतिविधियों में सहयोग करने हेतु खाता संख्या 10205148690 स्टेट बैंक आफ इण्डिया, घन्टाघर, दिल्ली– 110007, आई. एफ. एस. कोड SBIN0001280 पर सीधे भेज कर हमें फोन न. 9810117464 पर एस.एम.एस कर दें या 9868051444 पर googlepay कर दें।

–अनिल आर्य

वर्ष-41 अंक-13 मार्गशीर्ष-2081 दयानन्दाब्द 201 01 दिसम्बर से 15 दिसम्बर 2024 (प्रथम अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.

प्रकाशित: 01.12.2024, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

आर्य समाज आर के पुरम व राजौरी गार्डन का उत्सव सम्पन्न

भगवा हमारी संस्कृति की पहचान है –अनिल आर्य

दिल्ली, रविवार 24 नवम्बर 2024, आर्य समाज आर के पुरम सेक्टर 9 एवं राजौरी गार्डन दिल्ली का वार्षिकोत्सव सोल्लास संपन्न हुआ। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि भगवा हमारी भारतीय संस्कृति की पहचान है।यह तप, त्याग और बलिदान का प्रतीक है।जब व्यक्ति पक जाता है और आयु के तीसरे चरण में सन्यास लेता है तब सन्यास के योग्य बनता है।यह पुरातन काल से चली आ रही व्यवस्था है इसे किसी वर्ग विशेष या संस्था से जोड़ा नहीं जा सकता।उन्होंने जोर देकर कहा कि समय की मांग है हिन्दू समाज जात पात से ऊपर उठकर संगठित हो तभी राष्ट्र सुरक्षित रहेगा।यज्ञ और योग से सभी को जोड़ा जा सकता है। वैदिक विद्वान डॉ. महेश विद्यालंकार ने कहा कि यह उत्सव हमें कर्तव्य बोध व जगाने के लिए आते हैं हम जागरूक हों और अपने जीवन का निर्माण करें। आर्य नेता आर्य रविदेव गुप्ता ने कहा कि आर्य समाज को ज़न आंदोलन बनाने के लिए आम व्यक्ति की समस्याओं से जुड़ना होगा।रविन्द्र आर्य व अनिल कवर ने कुशल संचालन किया। आचार्य विद्या प्रसाद मिश्र, आचार्य उर्वषबुद्ध जयपुर, बीजेपी नेता अनिल शर्मा आदि ने भी अपने विचार रखे।सूर्यपाल सिंह,ओम प्रकाश अरोड़ा ने धन्यवाद ज्ञापन किया। प्रमुख रूप से प्रकाशवीर शास्त्री, ओम प्रकाश यजुर्वेदी,एस पी सिंह, कमांडर पी सी बक्शी, हरिचंद,सुरेन्द्र गुप्ता, महावीर सिंह आर्य, शशि कांत, अजय खट्टर, स्वदेश शर्मा, कृष्ण लाल राणा, अतुल अरोड़ा आदि उपस्थित थे।

आर्य नेता अनिल आर्य का जन्मोत्सव सोल्लास सम्पन्न

अनिल आर्य का व्यक्तित्व सबको आकर्षित करता है –आचार्य प्रेमपाल शास्त्री

अनिल आर्य की कर्मठता अविरल निरंतर है –ओम सपरा

दिल्ली, गुरुवार 14 नवम्बर 2024, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य के जन्मोत्सव पर आर्य समाज कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मंडी, दिल्ली में भव्य समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता आर्य नेता ओम सपरा ने (पूर्व मेट्रो पोलेटिन मैजिस्ट्रेट) ने की। आचार्य प्रेमपाल शास्त्री (अध्यक्ष, सार्वदेशिक आर्य पुरोहित सभा) ने कहा कि समाजसेवा और परहित की भावना के साथ आप कार्य कर रहे हैं आपके सद प्रयासों को नमन है।आपकी कार्य शैली, कर्मठता व निरंतरता बेमिसाल है। हास्य योग गुरू जितेन कोही ने कहा कि हमने आपसे बहुत कुछ सीखा है आप सदैव आशावादी व ऊर्जावान रहते हैं। समारोह अध्यक्ष ओम सपरा ने कहा कि अनिल आर्य कभी विश्राम नहीं करते अपितु सबको व्यस्त रखते हैं।आपका व्यक्तित्व सबको अपना बना लेता है। एमिटी शिक्षण संस्थान के निदेशक आनंद चौहान ने शुभकामनाये देते हुए सदैव स्वस्थ रहने की कामना की। उत्तर प्रदेश प्रान्तीय अध्यक्ष प्रवीण आर्य ने कहा है कि आपकी कर्मठता लोगो को जोड़ने की कला अदभुत है। जिस कार्य को संभालते है उसे सफल करते हैं। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य महेन्द्र भाई ने यज्ञ करवाया व सामाजिक कार्य करने की प्रेरणा लेने का आह्वान किया। आर्य गायक प्रवीन आर्या पिंकी, रामकुमार पुंजानी, देवेन्द्र गुप्ता,यज्ञवीर चौहान, आस्था आर्य के मधुर संगीत पर सब झूम रहे थे। कार्यक्रम का कुशल संचालन दुर्गेश आर्य ने किया। प्रमुख रूप से रामकुमार आर्य, प्रमोद योगाचार्य, अरुण आर्य, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री,वरुण आर्य, संतोष शास्त्री, सुनील खुराना, सुदेश भगत, जय प्रकाश शास्त्री, कुँअरपाल शास्त्री, अंजना गुप्ता, प्रकाशवीर शास्त्री, महेन्द्र टांक, दशरथ भारद्वाज, संजीव आर्य, तिलक राज संदूजा, यज्ञवीर चौहान, देवेन्द्र गुप्ता आदि उपस्थित थे।

आर्यसमाज सत्य के प्रचार और असत्य को छुड़ाने का एक सार्वभौमिक आन्दोलन है

— मनमोहन कुमार आर्य

आर्यसमाज विश्व का ऐसा एक अपूर्व संगठन है जो किसी मनुष्य व महापुरुष द्वारा प्रचारित मत का प्रचार नहीं करता अपितु सृष्टि में विद्यमान सत्य की खोज कर सत्य का स्वयं ग्रहण करता व उसके प्रचार द्वारा विश्व के सभी मनुष्यों से उसे अपनाने, ग्रहण व धारण करने का आग्रह करता है। ऋषि दयानन्द के जीवन पर दृष्टि डालने से ज्ञात होता है कि उन्होंने अपने परिवार में प्रचलित अतार्किक मूर्तिपूजा का इस कारण से विरोध किया था कि मूर्ति में अपने ऊपर ऊछल–कूद करने वाले चूहों को भी हटाने व भगाने की शक्ति नहीं थी और न अब है। उन्होंने अपने पिता व पण्डितों से मूर्ति के ईश्वर होने व उसमें दैवीय शक्ति होने पर प्रश्न किये थे? तत्कालीन कोई विद्वान उनकी शंकाओं का समाधान नहीं कर सका था। वह इस निष्कर्ष पर पहुंचे थे कि ईश्वर के नाम पर बनाई जाने वाली मूर्तियों व उनकी पूजा किये जाने पर भी उन मूर्तियों में ईश्वर की दैवीय शक्ति का किंचित न्यून अंश भी विद्यमान नहीं है। उसके बाद ऋषि दयानन्द ने तथा उनके अनुगामी सभी बुद्धिमान विवेकयुक्त मनुष्यों ने भी इस बात का अनुभव किया। वेद सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर से चार ऋषियों को प्राप्त ज्ञान है। उनमें ईश्वर के सत्यस्वरूप का विस्तार से वर्णन है। ईश्वर की उपासना का भी वेदों में विस्तृत वर्णन है। वेदों के आधार पर ही ऋषि पतंजलि ने ईश्वर की उपासना की विधि व उसके विवेचन पर ''योगदर्शन'' ग्रन्थ का प्रणयन किया था। इनमें से किसी भी ग्रन्थ में ईश्वर की मूर्ति बनाकर पूजा व उपासना करने का विधान नहीं है। विचार व परीक्षा करने पर भी मूर्तिपूजा द्वारा ईश्वर की पूजा व उपासना होनी सिद्ध नहीं होती और न ही इससे मनुष्य को कोई लाभ होता है। मूर्तिपूजा से हानियां अवश्य होती हैं जिनका दिग्दर्शन ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ के ग्यारहवें समुल्लास में कराया है। अतः ईश्वर का सत्यस्वरूप जानने के बाद ईश्वर की उपासना का एक ही विधान विदित होता है और वह है ईश्वर के गुण, कर्म व स्वभाव का चिन्तन, मनन, विचार व ध्यान करते हुए उसकी उसके सत्य गुण, कर्म व स्वभाव से स्तुति, प्रार्थना व उपासना करना। ऐसा ही आदि काल से वर्तमान काल के सभी धार्मिक विद्वान, विचारक, चिन्तक, वेदानुयायी करते आ हैं और इस ध्यानोपासना मार्ग से ही ईश्वर को काई भी मनुष्य प्राप्त कर सकता है। ईश्वर को प्राप्त करने का मार्ग यही है कि उसके वेदवर्णित गुणों का चिन्तन, मनन, विचार व ध्यान किया जाये और अष्टांग योग का अभ्यास कर समाधि अवस्था को प्राप्त होकर उसके ध्यान के द्वारा उसका साक्षात्कार किया जाये।

ऋषि दयानन्द को अपने जीवन में ईश्वर का साक्षात्कार करने तथा वेदाध्ययन से जो यर्थाथ ज्ञान प्राप्त हुआ उसमें उन्होंने पाया कि संसार में ईश्वर ही सच्चिदानन्दस्वरूप, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, सृष्टिकर्ता, अनादि व नित्य स्वरूप वाला है। ईश्वर से इतर जीवात्मा सूक्ष्म, अल्प प्रमाण, एकदेशी, ससीम, अल्पज्ञ एवं अल्पशक्तियों वाली जन्म व मरण धर्मा सत्ता है। जीवात्मा का कल्याण ईश्वर को जानकर वेद की ज्ञान–विज्ञान पर आधारित ध्यान विधि से स्तुति, प्रार्थना व उपासना करने से होता है। इस उपासना में मूर्तिपूजा का कोई स्थान व महत्व नहीं है। ईश्वर सर्वव्यापक होने से मूर्ति के भीतर व बाहर दोनों स्थानों पर होता है। वह हमारी आत्मा के भीतर व बाहर तथा शरीर के भीतर व बाहर सर्वत्र विद्यमान है। वह संसार के प्रत्येक पदार्थ व वस्तु में व्यापक व समाया हुआ है। अतः सभी पदार्थों व वस्तुओं में उसकी समान रुप से उपस्थिति व विद्यमानता को जानना, उसका अनुभव करना व उसके गुणों का चिन्तन करते हुए उससे एकाकार हो जाना ही उसकी स्तुति, प्रार्थना व उपासना होती है। इस वेदादि सम्मत ईश्वरी की उपासना ही संसार के प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य व धर्म होता है। इन तथ्यों व रहस्यों का देश व विश्व में प्रचार करने के लिये ऋषि दयानन्द को आर्यसमाज नामी संगठन को स्थापित करना पड़ा था।

ऋषि दयानन्द ने अपने जीवन में देश के अधिकांश भागों का भ्रमण किया था। वह देश के अधिकांश धार्मिक स्थानों पर गये थे जहां कोई विद्वान, मनीषी, चिन्तक व विचारक हो सकता था। वह हिमालय प्रदेश के धर्म स्थलों सहित पर्वतों की कन्दराओं में भी गये और वहां उन्होंने तपस्वी योगी व ध्यान व समाधि का अभ्यास करने वाले सिद्ध पुरुषों व विद्वानों की खोज की थी। उन्होंने सभी मनीषी व विद्वानों से वार्तालाप कर उनसे ज्ञान प्राप्त किया था। उन्होंने अपने समय में देश में उपलब्ध समस्त धार्मिक साहित्य का भी अध्ययन किया था। वह संस्कृत के विद्वान थे, अतः प्राचीन संस्कृत ग्रन्थों का अध्ययन करने में उन्हें किसी प्रकार की असुविधा नहीं होती थी। अपनी अध्ययनशीलता, कठोर तप एवं साधनाओं के कारण ही वह समाधि अवस्था को प्राप्त कर ईश्वर का साक्षात्कार लेने के बाद भी सन्तुष्ट नहीं हुए थे। उनकी विद्या की भूख अतृप्त बनी हुई थी। ईश्वर का साक्षात्कार कर लेने पर भी पूर्ण विद्या की उपलब्धि न होने के वह कारण सन्तुष्ट नहीं थे। अपने गुरु स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती से उन्हें मथुरा के दण्डी स्वामी प्रज्ञाचक्षु विरजानन्द जी के आर्षप्रज्ञावान् वा वेदज्ञानी होने का ज्ञान हुआ था। उनकी प्रेरणा से ही सन् 1860 में वह स्वामी विरजानन्द जी को प्राप्त हुए और तीन वर्ष तक उनके सान्निध्य में रहकर वेद व वेदांगों का अध्ययन किया। इस अध्ययन के परिणाम से वह वेदविद् विद्वान बने और वेदों के मर्मज्ञ बनकर ऋषित्व को प्राप्त हुए थे।

गुरु विरजानन्द जी की प्रेरणा व परस्पर चर्चा से ऋषि दयानन्द को यह विदित हुआ था कि संसार में दुःखों का कारण अविद्या ही है। उन दिनों जितने मत प्रचलित थे वह सब अविद्या से ग्रस्त थे। ज्ञान व विद्या एक ही व सर्वत्र एक समान हुआ करता है। वह परस्पर भिन्न व परस्पर विपरीत कदापि नहीं होता। यदि सभी मतों में अविद्या न होती तो वह एक समान विचार, समान नियमों, मान्यताओं व सिद्धान्तों को मानने वाले होते। उनके नियम व परम्परायें पृथक–पृथक कदापि न होती। अविद्या के कारण ही मत–मतान्तरों में भेद व अन्तर विद्यमान है। इस अविद्या रूपी अज्ञान को विद्या वा वेद के प्रचार से ही दूर किया जा सकता था। गुरु की इस प्रेरणा से ही उन्होंने अविद्या के विरुद्ध आन्दोलन किया और देश के भिन्न–भिन्न स्थानों पर जाकर वहां के लोगों को असत्य व अविद्या को छोड़ने तथा सत्य और विद्या का ग्रहण करने का प्रचार वा आन्दोलन किया था। ऋषि दयानन्द ने अपने प्रचार में अविद्या व असत्य पर आधारित सभी असत्य मान्यताओं पर आधारित अन्धविश्वासों एवं पाखण्डों का खण्डन भी किया था। उन्होंने अविद्या पर आधारित सभी सामाजिक कुरीतियों व परम्पराओं का खण्डन कर विद्या पर आधारित सुरीतियों व परम्पराओं को ग्रहण व धारण करने का आन्दोलन व प्रचार किया। उनके अनुयायियों ने भी उनके बाद इसी कार्य को जारी रखा है जिसका प्रभाव देश व विश्व में पड़ा है।

ऋषि दयानन्द के प्रचार रूपी आन्दोलन के परिणामस्वरूप मत–मतान्तरों ने अपनी मान्यताओं पर विचार किया और उनकी व्याख्यायें बुद्धि पूर्वक करने के उनके प्रयत्न देखे गये हैं। देश से अविद्या को दूर करने के लिये भी ऋषि दयानन्द के विचारों के अनुकूल उनके अनुयायियों ने गुरुकुल व दयानन्द ऐंग्लो वैदिक स्कूल व कालेज खोले जिससे देश से अविद्या रूपी अन्धकार दूर करने में सफलता मिली है। देश को आजादी की प्रेरणा भी ऋषि दयानन्द ने ही की थी। ऐसा माना जाता है कि देश की आजादी के आन्दोलन में 80 प्रतिशत लोग ऋषि दयानन्द व आर्यसमाज के देश भक्ति व स्वतन्त्रता के विचारों से प्रेरित व प्रभावित थे। स्वामी श्रद्धानन्द, पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा, लाला लाजपत राय, भाई परमानन्द, पं. रामप्रसाद बिस्मिल तथा वीर भगत सिंह आदि अगणित लोग ऋषि दयानन्द से प्रत्यक्ष रूप से जुड़े व प्रभावित थे।

समाज कल्याण व उत्थान का ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है, जहां ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज ने आन्दोलन कर उसका सुधार न किया हो।

(शेष पृष्ठ 3 पर)

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा कोरोना काल से 681वां वेबिनार सम्पन्न

'प्रदूषण' विषय पर गोष्ठी सम्पन्न

प्रदूषण कोई भी हो वह खतरनाक होता है –प्रो. नरेंद्र आहूजा विवेक

सोमवार 25 नवम्बर 2024, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में 'प्रदूषण' विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह कोरोना काल से 681 वाँ वेबिनार था। मुख्य वक्ता प्रो.नरेंद्र आहूजा विवेक (पूर्व राज्य ओषधि नियंत्रक हरियाणा) ने कहा कि प्रदूषण के कई प्रकार हैं यह वायु मंडल का भी है,वैचारिक भी और सामाजिक और राष्ट्रीय भी प्रदूषण कोई भी हो वह खतरनाक होता है।उन्होंने कहा की पराली जलाने,वाहनों के धुएँ, निर्माण कार्यों,कूड़ा जलाने और बढ़ती ठंड से वातावरण में प्रदूषण एयर क्वालिटी इंडेक्स बढ़ता है और सांस लेना दूभर हो जाता है तो उसके समाधान के लिए उच्चतम न्यायलय ग्रेप 4 के सख्त प्रावधान लागु कर देता है ताकि इस प्रदूषण पर नियंत्रण पाया जा सके।नरेन्द्र विवेक ने कहा लेकिन यदि यह प्रदूषण मानसिक हो अर्थात काम,क्रोध, लोभ,मोह,ईर्ष्या,द्वेष,स्वार्थ,अहंकार जैसी कलुषित भावनाओं से पैदा प्रदूषण को दूर करने के उपाय आर्य वैदिक सिद्धांतो से ही निकलते हैं।सामाजिक प्रदूषण में बढ़ता अंधविश्वास पाखंड कुरीतियों के साथ ही समाज का जातिगत कबीलों में टूटना आदि आते हैं।सामाजिक प्रदूषण को दूर करने के लिए हमें एक हैं तो सेफ हैं या बटेंगे तो कटेंगे जैसे जोड़ने वाले नारों को याद रखना चाहिए। मुख्य अतिथि आर्य नेता राजेश मेहंदीरता व ओम सपरा ने प्रदूषण के विभिन्न स्वरुपों की चर्चा की स परिषद अध्यक्ष अनिल आर्य ने कुशल संचालन किया व प्रदेश अध्यक्ष प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया। गायिका कौशल्या अरोड़ा, कुसुम भंडारी, सुधीर बंसल, सुनीता अरोड़ा, रविन्द्र गुप्ता, उषा सूद आदि के मधुर भजन हुए।

'इदन्न मम' विषय पर गोष्ठी सम्पन्न

मेरा कुछ नहीं सब उसका है– रजनी चुघ

मंगलवार 19 नवम्बर 2024,केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में 'इदन्न मम' विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह कोरोना काल से 680 वाँ वेबिनार था। वैदिक विदुषी रजनी चुघ ने कहा कि यह मेरा नहीं है अपितु सब ईश्वर का है जैसे जैसे यह भावना बढ़ेगी वैसे ही ईश्वर के प्रति समीपता बढ़ेगी। उन्होंने कहा कि जीवन में मोक्ष का मार्ग व अमरता का साधन ज्ञान, धर्म और धर्माचरण है।इसलिए यह विचार सदैव रखना चाहिए कि इस संसार में मेरा कुछ नहीं है। हमारे ऋषियों द्वारा बनाया गया विधान सर्वश्रेष्ठ है वैदिक वांग्मय के अनुसार इर्षाद्वेष लोभमोह आदि बंधनों से दूर रहना ही जीवन है।संध्या यज्ञ में बार बार इदन्न मम शब्द आता है जिसका भाव यह सब द्रव्य मेरे नहीं है' मुख्य अतिथि राजश्री यादव ने कहा कि व्यक्ति को निर्लेप भाव से संसार में रहना चाहिए। कुशल संचालन परिषद अध्यक्ष अनिल आर्य ने किया व प्रदेश अध्यक्ष प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया। गायिका कौशल्या अरोड़ा, कमला हंस, रचना वर्मा, सुनीता अरोड़ा, उषा सूद, सुधीर बंसल, कुसुम भंडारी ,शोभा बत्रा, सरला बजाज, रविन्द्र गुप्ता आदि ने मधुर भजन सुनाए।

(पृष्ठ 2 का शेष) अतः आर्यसमाज विश्व में सत्य का प्रचारक एक अपूर्व संगठन है। आर्यसमाज की सभी मान्यतायें व सिद्धान्त सर्वांश में सत्य अर्थात् ईश्वरीय ज्ञान 'वेद' पर आधारित हैं। अन्धविश्वासों व अविद्या का उनमें किंचित भी अंश नहीं है। मनुष्यों व विश्व के व्यापक हित में आर्यसमाज सत्य मान्यताओं व सिद्धान्तों को सभी मनुष्यों के जीवन में स्थापित करना चाहता है। इस कारण यह प्रचलित मत–मतान्तरों से सर्वथा भिन्न सत्य विद्याओं का प्रचार करने वाला वेद–प्रचार का आन्दोलन है। इसी से मनुष्यों का कल्याण होकर न केवल हमारे देश का अपितु विश्व का भी कल्याण होगा। सर्वत्र शान्ति स्थापित होगी। घृणा, द्वेष व हिंसा समाप्त होकर प्रेम तथा अहिंसा का वातावरण बनेगा। सबके सुख व उन्नति के लिये ही ऋषि दयानन्द ने अपना जीवन वेद प्रचार आन्दोलन के लिये समर्पित किया था। भविष्य में विश्व को वेद रूपी वट वृक्ष की छांव में आकर बैठने से शान्ति प्राप्त होगी। मनुष्य जीवन, समाज तथा देश–देशान्तर में शान्ति स्थापना का प्रमुख आधार व उपाय वेदों का अध्ययन व उसकी शिक्षाओं का प्रचार सहित उनका धारण व पोषण करना ही सिद्ध होता है। आईये! वेदों के अध्ययन का व्रत लें और दूसरों को भी वेद को अपनाने की प्रेरणा करें। वेदाध्ययन से हम ईश्वर सहित सुख व शान्ति को प्राप्त होंगे और हमारा मनुष्य जीवन अपने इष्ट लक्ष्य धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को प्राप्त होगा। सृष्टि के आरम्भ में परमात्मा से प्राप्त वेदज्ञान की रक्षा करना व उसकी शिक्षाओं के अनुरूप आचरण करना संसार के प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य एवं धर्म है।

जहां होता है भरपूर काम और प्रभु का गुणगान आर्य युवक परिषद् है उसका नाम

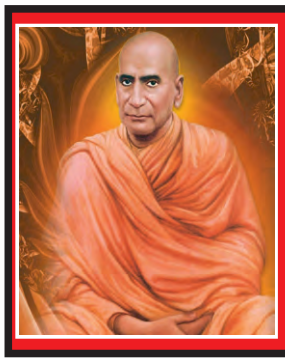

उनकी तुरबत पर नहीं एक भी दिया, जिनके खूँ से जले थे चिरागे वतन।
आज महकते है मकबरे उनके, जिन्होंने बेचे थे शहीदों के कफन।।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद की केन्द्र सरकार से माँग

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन

नया बाजार दिल्ली को राष्ट्रीय स्मारक घोषित करो

जन्मदिवस के शुभअवसर पर डॉ. अशोक कुमार चौहान द्वारा

डॉ. अनिल आर्य को शुभकामनाएं व आशीर्वाद!

प्रिय डॉ. अनिल आर्य जी,

आज मेरे लिए, पूरे चौहान परिवार के लिए, समस्त ऐमिटी शिक्षण समुदाय के लिए एवं सम्पूर्ण राष्ट्र के लिए एक अत्यंत महत्वपूर्ण एवं गौरवमय दिन है। आज आपका शुभ जन्मदिवस है।

आप जिस प्रकार से समाज सेवा, धर्म के प्रचार एवं प्रसार, अपने देश की प्राचीन संस्कृति और विचारों एवं देश के उत्थान और विकास के लिए दिन–रात लगे रहते हो, ऐसे व्यक्तियों की श्रेणी में आप का अग्रणी स्थान है। पूरे समाज को और हमारे पूरे परिवार को आप पर बहुत गर्व है। मैं भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि ऐसा ही काम करने की शक्ति एवं सामर्थ्य भगवान आपको सदैव देते रहें और आप अपने पूरे आर्य समाज के समूह के साथ मिल कर देश को विश्वशक्ति बनाने में अपना सम्पूर्ण योगदान देते रहो। मुझे पूर्ण विश्वास है कि श्रीमती पिंकी जी और हमारी बेटी, प्रिय आस्था, जो की एमिटी संस्थान में रह कर एमिटी के विचारों और संस्कारों से ओत–प्रोत है, इसी प्रकार आपके साथ मिल कर विश्व में आर्यसमाज का और परम आदरणीय स्वामी दयाननद जी के आदर्शों का डंका बजाते रहें।

आज इस शुभ अवसर पर मैं आदरणीय डॉ. अमिता जी, प्रिय सपना जी, आनंद भाई–मृदुला, अरुण भाई–रेनू, अजय भाई–मल्लिका, प्रिय डॉ. अतुलजी–पूजा, प्रिय डॉ. असीम जी–दिव्या, एवं परिवार के अन्य सभी सदस्यों के साथ प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि वह आपको लम्बी आयु, अच्छा स्वास्थ्य और शक्ति दें, जिससे आप आने वाले कई दशकों तक इसी तरह सम्पूर्ण ऊर्जा, शक्ति और सामर्थ्य के साथ भारत राष्ट्र के विकास में अपना सहयोग देते रहें। **जन्मदिवस की हार्दिक शुभकामनाएं। परिवार में सभी को मेरा आशीर्वाद और शुभकामनाएं दीजिएगा।** आशीर्वाद और शुभकामनाएं के साथ,

–डॉ. अशोक कुमार चौहान

ऋषिकेष योग साधना शिविर व Kunsotocom नीमराना का अवलोकन

उत्तराखण्ड, शुक्रवार 22 नवम्बर 2024, आनंद प्रकाश आश्रम की शाखा जंगल आश्रम ऋषिकेश में आयोजित योग शिविर में सम्मिलित हुए। चित्र में आचार्य विश्व केतु जी को सम्मानित करते अनिल आर्य व पिंकी आर्य। लगभग 10 देशों से साधक एकत्र हुए। द्वितीय चित्र राजस्थान, नीमराना, शनिवार 16 नवम्बर 2024, श्री आनंद चौहान जी फैक्टरी **kunstocom** का अवलोकन करने अनिल आर्य, ओम सपरा, प्रमोद सपरा प्लांट हेड श्री आर बाला जी स्वागत करते हुए।

सौरभ–पायल व ममता–यज्ञवीर चौहान को बधाई

रविवार 24 नवम्बर 2024,गाजियाबाद, परिषद के व्यायाम शिक्षक व संघठन मंत्री सौरभ गुप्ता की सगाई पायल गर्ग के साथ हुई। हार्दिक बधाई व शुभकामनायें। द्वितीय चित्र शनिअंत 23 नवम्बर 2024, परिषद के गाजियाबाद जिला अध्यक्ष यज्ञवीर चौहान की बिटिया प्रज्ञा के विवाह समारोह में परिषद के अधिकारीगण नव दंपति को आशीर्वाद।

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिंटर्स**, 2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली–5 दूरभाष : 41548503 **मो.**: 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी–176–177, कबीर बस्ती, दिल्ली–7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970